International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.1 Sept – Oct 2021

अनुवाद का स्वरूप,प्रकार तथा प्रासंगिकता

प्रा. डॉ.भारत उपाध्य
वारणा महाविद्यालय,ऐतवडे खुर्द

भूमिका:

आज के युग में हिंदी अनुवाद और रोजगार के विविध मार्ग काफी महत्वपूर्ण और प्रांसगिक है । संसार में अनगिनत भाषाएँ बोलि जाती है । कोई भी देश कितना भी विकसित क्यों ना हो, उसे अन्य देशों से संपर्क करना ही होता है । अत वहाँ संपर्क भाषा की आवश्यकता पडती है । इसलिए कहां जा सकता है कि संपर्क भाषा तथा आंतर्राष्ट्रिय भाषा के निर्माण में अनुवाद की प्रमुख भूमिका आ जाती है । इसलिए अनुवाद आज की सर्वाधिक चर्चित और महत्वपूर्ण विधा के रूप में सामने आ रही है । रोजमर्रा के कामकाज से लेकर वैज्ञानिक तकनिकी तक अनुवाद कि आवश्यकता महसूस हो रही है।रोजगार के मार्ग हेतु भाषा , साहित्य, दर्शन , ज्ञान-विज्ञान की श्रीवृध्दी के लिए अनुवाद का अपने- आप में महत्वपूर्ण माना जा रहा है । आज विश्व के कई शिक्षा संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा का अध्ययन तथा अध्यापन का कार्य चल रहा है । अनुवाद एक देश-प्रदेश अथवा साहित्य से किसी दूसरे भू-भाग , साहित्य एवं संस्कृति के बीच सेतु का काम करता है । इसी का परिणाम हिन्दी भाषा विश्व बाजार में अपना स्थान बनाये रखने में सफल है । भारत देश जैसे विशाल भूभाग में उपभोक्ता वर्ग भी काफी मात्रा में है । इसलिए विज्ञापन के क्षेत्र में भी हिन्दी अनुवाद की भूमिका काफी महत्वपूर्ण साबित हो रही है । इस दृष्टी से संक्षेप में कहा जा सकता है की वर्तमान वैश्विक परप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा के द्वारा अनुवाद के क्षेत्र में विभीन्न अवसर उपलब्ध है ।

उद्देश्य:

हिन्दी अनुवाद – रोजगार के विभिन्न मार्ग यह विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है । वर्तमान स्थितियों में अनुवाद की उपयोगिता काफी बढ चुकी है । इस दृष्टि से इस विषय के उद्देश्य निम्नानुसार है ।

1) दो भाषाओं की दूरियों को दूर करना
2) संपर्क तथा विचारों की समृध्दी का आदान प्रदान
3) शिक्षा क्षेत्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण
4) भाषा और साहित्य में समृध्दि

5) रोजगार का महत्वपूर्ण साधन
6) विश्व की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का अध्ययन
7) व्यापार का सशक्त साधन

शोध की आवश्यकता :

वर्तमान युग भूमडलीकरण और वैश्विकरण का युग है । वैश्विकरण की प्रक्रिया शुरू होते दो दशक बीत रहे है । इसके प्रत्यक्ष परिणाम अब दिखाई देने शुरू हो गये है । आज पूरा विश्व एक परिवार के रूप में उभर रहा है इसका प्रमुख कारण सम्प्रेक्षण की सुविधा अथवा प्रौद्योगिकी में सूचना क्रांति का सूत्रपात होना यह है । भारत एक बहुभाषिक देश है और यहां के विभिन्न प्रदेशों के लोगों के साथ एक निश्चित भाषा में सम्प्रेक्षण करने की आवश्यकता बाजार का लक्ष्य है । इस दृष्टी से हिन्दी देश की एकमात्र भाषा है जो कई क्षेत्रों में केंद्रवर्ती स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में उपस्थित है । इसी कारण हिन्दी भाषा में रोजगार के कई मार्ग उपलब्ध हो रहे है । हिन्दी भाषा - रोजगार के विभीन्न मार्ग हेतु इस दृष्टि से शोध की आवश्यकता तथा अनेक संभावनाएं है ।

अनुवाद की परिभाषा / स्वरूप एवं प्रकार

अनुवाद की परिभाषा या स्वरुप को देखते हुए पहले अंग्रेजी शब्द Translation का हिन्दी अनुवाद को देखना पMMrMडता है । इसकी व्युपत्ति लैटिन शब्द Lation (पार) और (ले जाने की प्रक्रीया) शब्दों के योग के हुई है । अत: Translation शब्द का व्युत्पत्ति मूलक अर्थ हुआ – एक भाषा से दूसरी भाषा तक ले जाना । आज हिंदी अनुवाद का विश्व की सभी भाषाओं में महत्वपूर्ण योगदान तथा आवश्यकता रही है । अत सभी भाषाओं को विद्वानों ने इसे अपने-अपने विवेक एवं मतानुसार परिभाषित किया है । यहा हम कुछ भाषाओं के विद्वानों की अनुवाद विषयक परिभाषा निम्नलिखित देख सकते है -

1) शब्दर्थ चिंतामणि -- ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने . अर्थात प्राप्त कथन को फिर से कहना या ज्ञात प्रतिपादन करना ही अनुवाद है ।

2) डॉ. दंगल झाल्टे -- उत्तम अनुवाद वही है जिसमें मूल विषय की मुख्य बाते ज्यौं की त्यौं आ जाए अर्थात मुख्य बातों में से कोई भी महत्वपूर्ण कडी छुटनी नही चाहिए और न ही तथ्य को विपरीत दिशाओं में तोडा मरोडा जाना चाहिए

3) जे. सी. कैटफोर्ड - " किसी एक भाषा (स्त्रोत भाषा) की पाठ्य सामग्री को किसी दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में उसी रूप में रूपातंरित करना अनुवाद है । "

4) डॉ. भोलानाथ तिवारी -- एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथा संभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है ।

5) जैमिनीय न्यायमाला : - " ज्ञातस्य कथनअनुवाद:" अर्थात ज्ञात का कथन अनुवाद है ।

अनुवाद का व्यापक दृष्टि से विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दो या दो से अधिक भाषाओं का सम्यक ज्ञान अनुवाद के लिए आवश्यक है । यद्यपि अनुवाद सबसे प्राचीन व्यवसाय या व्यवसायों में से एक कहलाता है , जिसे अत्याधिक महत्व बीसवीं सदी में ही प्राप्त हुआ है । इसका मुख्य कारण है कि बीसवीं सदी में ही भाषा संपर्क अधिक

मात्रा में उभरकर आया, जिसका मूल करण आर्थिक (व्यापारी) तथा राजनीतिक नीतियों में है ।संक्षिप्त रूप से अनुवाद का अर्थ है कि एक भाषा की पाठ्य सामग्री या विचार दूसरी भाषा की पाठ्य सामग्री अथवा अभिव्यक्त बातों को जैसे के वैसा व्यक्त करने का प्रयास है ।

अनुवाद के प्रकार तथा भेद :-अनुवाद की प्रक्रिया , सामग्री तथा उद्देश्य के आधार पर अनुवाद के कई भेद हो सकते हैं

1) पाश्चात विद्वान **जे.डी.कैटफोर्ड** ने पाठ्य विस्तार, भाषा स्तर और भाषा श्रेणी के आधार पर अनुवाद के सात प्रकार बताये हैं ।

1) पाठ्यविस्तार का के आधार पर अनुवाद के दो भेद बताये है –

क) पूर्णानुवाद ख) आंशिक अनुवाद ।

2) भाषा स्तर के आधार पर दो भेद - क) समस्त ख) सीमित

3) भाषा श्रेणी के आधार पर तीन भेद – क)मुक्तानुवाद ख) शाब्दिक ग) शब्दश: अनुवाद

2) भारतीय भाषाविद् **डां. भोलोनाथ तिवारी** ने गद्य – पद्य, साहित्य विधा , अनुवाद विषय, तथा अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के लगभग अठरा भेदों की चर्चा की है । जैसे –

1) पद्यानुवाद
2) गद्यानुवाद
3) काव्यानुवाद,
4) नाट्यानुवाद
5) शब्दानुवाद
6) धार्मिक एवं पौराणिक साहित्य अनुवाद
7), ललित साहित्य का अनुवाद
8) समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद,
9) प्रशासनिक साहित्यानुवाद
10) वैज्ञानिक एवं तकनिकी अनुवाद
11) विधि साहित्यानुवाद
12) भावानुवाद
13) सारानुवाद
14) आदर्श अनुवाद
15) व्याख्यानुवाद

3) **डॉ. जी.पी.गोपीनाथन** ने विषय वस्तु के आधार पर अनुवाद के भेद किये है --

1) विषय के आधार पर : -

क) **साहित्यिक अनुवाद** – जीवनी, निबंध, आलोचना आदी ।

ख) **साहित्येत्तर अनुवाद** – भाषा वैज्ञानिकी, तकनिकी, वाणिज्यिकी, समाजशास्त्रीय, संचार माध्यमों, कानुनी तथा प्रशासनिक अनुवाद ।

2) अनुवाद प्रकृति के आधार पर मुख्य दो भेद किये है -

क **) बाह्यआधार**

ख **) आन्तरिक आधार**

उपरोक्त भेदों के अतिरिक्त अनुवाद के कई भेद है - जैसे - शब्दक्रमाग्रही , शब्दाग्रही , सम्यकाग्रही, सहजानुवाद, प्रति अनुवाद, अनुसृजन,आदि ।

इस तरह के अनुवाद विभिन्न प्रकारों के आधार पर किये जाते हैं और सफल भी होते हैं । कहा जा सकता है कि मूल सामग्री के गहन अध्ययन तथा चिन्तन मनन के बाद, उसके स्वरूप तथा उद्देश्य के अनुरूप पाठकों तक उपरोक्त स्तरों पर सहज, प्रभावी ढंग में सम्प्रेषित होने वाला तथा लक्ष्य भाषा को परिष्कृत करने वाला एक अच्छा अनुवाद कहलाया जा सकता है । अनुवादक के पास अच्छा विषय ज्ञान होना चाहिए ।

अनुवाद की स्थिति -

वर्तमान स्थिति में अनुवाद के सामने कई चुनौतियां खड़ी हैं । वास्तव में भारत देश में अनुवाद की कला 19वीं सदी से पहले से अस्तित्व में दिखाई देती है । विशेषत अग्रेजी शिक्षा नीति के चलते अनुवाद विशेष गति प्राप्त हुई । इसके बावजुद भी अनुवाद एक कला के रूप में अधिक विकसित हुआ रोजगार की दृष्टि से नही । आज भले ही अनुवाद का विकास पूर्ण रूप हुआ दिखाई देता है इसके बावजुद भी वह एक व्यवसाय या रोजी रोटी पाने के महत्वपूर्ण क्षेत्र की दृष्टि से उतना विकसित नही है । परंतु वैश्वकरण के कारण इस क्षेत्र में रोजगार के कई अवसर उपलब्ध हो चुके है और निरंतर हो रहे है ।

अनुवाद के क्षेत्र में मुख्यत दो प्रकार के रोजगार के मार्ग मिल सकते है **&**

1 व्यवसायाभिमुख अनुवादक

2 मासिक वेतन लेने वाला अनुवादक

इसके आलावा हिन्दी का अध्ययन करने पर निम्न क्षेत्र में रोजगार मिल सकते हैं **&**

1) दुभाषिया 2) पर्यटक मार्गदर्शक 3) अनुवादक 4) विधि क्षेत्र 5) संपादक 6) निवेदक 7) हिन्दी अधिकारी 9) विज्ञापन निर्माता 10) राजभाषा अधिकारी 11) रिपोतार्ज लेखक 12) प्रूफ रीडर 13) गीतकार 14) जनसंचार का माध्यम 15) राष्ट्रियकृत बँक 16) धारावाहिक लेखक17) फीचर लेखक 18) शब्दकोश निर्मिती 19) प्राध्यापक 20) तकनिकी क्षेत्र आदि क्षेत्रों में रोजगार के मार्ग मिल सकते है **&**

उपसंहार – आज अनुवाद के क्षेत्र में अनेक रोजगार के मार्ग के उपलब्ध हैं, पर इसके लिए छात्रों को बहुभाषिक होना और भाषाओं का संपूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है । आज संसार में वही भाषा समृध्द एवं संपन्न है जो साहित्य के साथ वैश्विक बाजार में अपना स्थान बना सके । अंग्रेजी के साथ हिन्दी ने समय के महत्व को समझ लिया । आज भारत सरकार द्वारा सभी विश्वविद्यालयों में अनुवाद के संदर्भ में कई कोर्स शुरू किए गये है । साथ ही देश भर के महाविद्यालयों में अनुवाद के कोर्स शुरु करने की आवश्यकता है ।

संदर्भ सूची --

1) वैश्वीकरणक के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य–प्रो.माधव सोनटक्के
2) प्रयोजनमूलक हिन्दी ----- डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी , डॉ. पवन अग्रवाल
3) अनुवाद चिंतन ----- डॉ. अर्जुन चव्हाण
4) प्रयोजनमूलक हिन्दी- अधुनादतन आयाम --- डॉ. अंबादास देशमुख
5) अनुवाद सिध्दांत एवं स्वरूप ------ डॉ. सराफ , डॉ.गोस्वामी